इकाई 11 शक्ति व सत्ता*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 शक्ति और सत्ता की अवधारणाएं

11.2.1 सत्ता के तत्व

11.3 सामाजिक कार्य, के प्रकार व सत्ता के प्रकार

11.3.1 सामाजिक कार्य के प्रकार

11.3.2 सत्ता के प्रकार

11.4 नौकरशाही

11.4.1 नौकरशाही के मुख्य लक्षण

11.4.2 नौकरशाही में अधिकारी वर्ग की विशेषताएं

11.5 सारांश

11.6 संदर्भ

11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपके लिए संभव होगाः

- शक्ति और सत्ता की अवधारणाओं को समझना
- वेबर के सामाजिक कार्य के प्रकारों और सत्ता के प्रकारों के बीच संबंध को स्पष्ट करना
- सत्ता के तीन प्रकारों पारंपरिक, करिश्माई और तर्क-विधिक की विस्तार से व्याख्या करना और
- तर्क-विधिक सत्ता का प्रयोग नौकरशाही द्वारा किस तरह किया जाता है, उसकी विवेचना करना

11.1 प्रस्तावना

इस इकाई में **शक्ति** और **सत्ता** को समझने में वेबर महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। भाग 11.2 में शक्ति और सत्ता की समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का संक्षेप में विवेचन किया गया है जिसमें इन शब्दों के संबंध में वेबर की दृष्टि की विशेष चर्चा की गई हैं। भाग 11.3 में वेबर द्वारा बताए गए सामाजिक कार्य के प्रकारों की चर्चा की गई है। सत्ता के प्रकारों मुख्यतः पारंपरिक, करिश्माई तथा तर्क विधिक सत्ता का उल्लेख किया गया है। भाग 11.4 में आपका ध्यान नौकरशाही पर केंन्द्रित किया गया है जो तर्क विधिक सत्ता को प्रयोग में लाने का एक प्रमुख उदारहण है।

* इग्नू पाठ्सामग्री *समाजशास्त्रीय सिद्धांत* (ESO 13) की इकाई 16 का नीता माथुर द्वारा संशोधन

11.2 शक्ति और सत्ता की अवधारणाएं

हमने इस पाठ्यक्रम धर्म का सामाजशास्त्र (BSOC 106) की इकाई 2 में विशिष्ट वेबरियन संदर्भ शक्ति और अधिकार दोनों की अवधारणाओं पर चर्चा की है। आइए हम यहाँ संक्षेप में इन अवधारणाओं की समीक्षा करें।

जब हम कहते हैं कि किसी व्यक्ति विशेष के पास शक्ति है तो आमतौर पर इसका अर्थ है कि वह दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। यह उम्मीद की जाती है कि ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छा दूसरों पर थोपने में सक्षम होता है। इस बात से तीन निष्कर्ष निकलते हैं : (i) शक्ति का तात्पर्य कम से कम दो व्यक्तियों के बीच का सामाजिक संबन्ध है; (ii) शक्ति पर आधारित सामाजिक सम्बंध विषम होता है, यानि एक व्यक्ति के पास शक्ति है, दूसरा व्यक्ति उसके आधीन है; और (iii) किसी व्यक्ति पर शक्ति का प्रयोग किया जाता हैं, यह एक व्यक्ति या लोगों का समूह हो सकता है। आपको आश्चर्य हो सकता है ऐसा कैसे होता है कि कुछ लोगों के पास सत्ता होती है जबकि अन्य लोगों के पास नहीं होती। कुछ लोग आज्ञा देने में सक्षम होते है और कुछ लोग आज्ञा मानतें हैं। आप में से कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि जो लोग शारीरिक रूप से ताकतवर होते हैं शक्ति धारण करते हैं किन्तु यह हमेशा सच नहीं होता। गेरथ एंड मिल्स (1953) समझाते हैं कि शक्ति मात्र एक संभावना है कि व्यक्ति या लोगों का एक समूह दूसरे की इच्छा के अनुरूप व्यवहार करेगा। यह आज्ञाकारिता, भय, किसी प्रकार के लाभ, वफादारी या किसी अन्य कारण से प्रत्याशा के कारण हो सकती है। यह भी देखा जाता है कि जिन लोगों का संसाधनों पर नियंत्रण होता है, वे ही शक्ति धारण करते हैं। शक्ति का प्रभाव एक से दूसरी परिस्थिति में भिन्न होता है। एक ओर यह शक्तिशाली व्यक्ति को दूसरों पर शक्ति प्रदर्शन की क्षमता पर निर्भर करता है। दूसरी ओर उस सीमा पर निर्भर है जहाँ तक उस शक्ति का दूसरों द्वारा प्रतिरोध या विरोध किया जाये ट्रैफिक पुलिस के मामले पर विचार करें जो व्यस्त सड़कों पर ट्रैफिक को नियंत्रित करते हैं। गाडियाँ उसके संकेत पर चलती और रूकती हैं। ऐसा क्यों होता है? जब वह रोकने के लिए लोगों को संकेत देता है तो वे अपनी कारों को क्यों रोकते है? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसकी/उसकी शक्ति को उस स्थिति के आधार पर वैधता दी जाती है जो वह संगठन में रखती है और यातायात प्रवर्तन विभाग द्वारा उसे सौंपी जाती है। इसलिए हम कहते हैं कि ट्रैफिक पुलिस के पास ऐसे ड्राइवरों का चालान करने का अधिकार है जो ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करते हैं। औपचारिक संगठनों में, प्राधिकरण स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट होता है (यानी, प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के अधिकार के बारे में पता होता है, जैसा कि संगठन अन्य लोगो का भी) और उस संगठन के नियमों के माध्यम से अधिकार निष्पादित किया जाता है। अनौपचारिक सांचे में, अधिकार परंपरा, किसी व्यक्ति के करिश्में और कई अन्य तरीकों से दिया।

11.2.1 सत्ता के तत्व

सत्ता की व्यवस्था के अस्तित्व के लिए निम्नलिखित तत्वों का होना आवश्यक है।

i) कोई शासक/स्वामी अथवा शासकों/स्वामियों का समूह

ii) कोई शक्ति/समूह, जिस पर शासन किया जाना है

iii) शासित लोगों के आचरण को प्रभावित करने की शासक की इच्छा जो आदेशों के माध्यम से व्यक्त होती है।

iv) शासित द्वारा प्रदर्शित आज्ञा-पालन के रूप में शासकों के प्रभाव का प्रमाण

v) इस बात का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रमाण कि शासित लोगों ने यह तथ्य स्वीकार कर लिय है कि शासक के आदेशों का अवश्य पालन किया जाना है।

आपने देखा कि सत्ता का अभिप्राय शासक और शासित के बीच पारस्परिक संबंध होना आवश्यक है। शासक ये मानते हैं कि उन्हें सत्ता का प्रयोग करने का वैध अधिकार है। दूसरी ओर, शासिक लोग शासक की इस शक्ति को स्वीकार करते हैं और उसका पालन करते है, जिससे उसकी वैधता ओर पुष्ट होती है।

सोचिये और करिए 1

सत्ता के तत्वों के संदर्भ में अपने दैनिक जीवन में सत्ता का कोई उदाहरण दीजिए। इस पर एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के साथ अपनी टिप्पणी का मिलान कीजिए।

बोध प्रश्न 1

i) शक्ति की परिभाषा दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) शक्ति के महत्वपूर्ण स्रोतों का उल्लेख दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) सत्ता के तीन महत्वपूर्ण तत्वों का परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.3 सामाजिक कार्य, के प्रकार व सत्ता के प्रकार

हमने सामाजिक कार्य के बारे में वेबर की अवधारणा का पहले भी विवेचन किया है। मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को सामाजिक कार्य का व्यापक विज्ञान बताया है (आरों 1967: 187)। वेबर ने सामाजिक कार्य का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, उसकी यहां संक्षेप में विवेचना की जा रही है।

11.3.1 सामाजिक कार्य के प्रकार

वेबर ने सामाजिक कार्य के निम्नलिखित चार प्रमुख प्रकार बताए है

i) किसी लक्ष्य के संदर्भ में तार्किक कार्य अथवा स्वैकरैशनल (Zweckrational) कार्यः इसका एक उदाहरण है पुल का निर्माण कर रहा एक इंजीनियर। उसकी गतिविधियां अपने लक्ष्य यानि निर्माण को पूरा करने की दिशा में संचालित होती है।

ii) किसी मूल्य के संदर्भ में तार्किक कार्य अथवा वैर्टरैशनल (wertrational) कार्यः इस कार्य में अपने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले सैनिक का उदाहरण दिया जा सकता है। उसका कार्य धन-दौलत की प्राप्ति जैसे किसी भौतिक लक्ष्य की पूर्ति के लिए नहीं बल्कि गौरव और देश-भक्ति जैसे विशिष्ट मूल्यों के लिए है।

iii) भावात्मक कार्यः इस प्रकार का कार्य व्यक्ति की भावात्मक स्थिति के फलस्वरूप होता है। जैसे कि बस में यदि कोई व्यक्ति किसी लड़की से छेड़खानी करता है तो वह लड़की नाराज़ होकर थप्पड़ मार देती है। उस लड़की को इतना उकसाया जाता है िकवह हिंसात्मक प्रतिक्रिया करती है।

iv) परम्परागत कार्यः यह कार्य उन परम्पराओं और विश्वासों से प्रेरित होता है, जो हमारे स्वभाव का अंग बन गए है। परम्परागत भारतीय समाज में बड़ों को प्रणाम अथवा नमस्कार करना एक तरह से स्वभाव का अंग है और सहज ही ऐसा हो जाता है।

यह देखा जा सकता है कि सामाजिक कार्य के उपर्युक्त वर्गीकरण की झलक वेबर की सत्ता की अवधारणा में भी मिलती है। इसकी चर्चा अगले उपभाग 11.3.2 में की गई है।

11.3.2 सत्ता के प्रकार

जैसा कि आपने पढ़ा है, सत्ता का अभिप्राय वैधता से है। वेबर के अनुसार वैधता की तीन प्रणालियां है, और इनमें से प्रत्येक के अनुरूप नियम है, जो आदेश देने की शक्ति को औचित्य प्रदान करते है। वैधता की निम्नलिखित तीन प्रणालियों को सत्ता के प्रकारों का नाम दिया गया है।

i) पारम्परिक सत्ता

ii) करिश्माई अथवा चमत्कारिक सत्ता

iii) तर्क-विधिक सत्ता

आइए, अब हम तीनों प्रकारों का उप-उपभागों में विस्तार से विवेचन करें।

i) पारम्परिक सत्ता

वैधता की यह प्रणाली पारम्परिक कार्य से निरूपित होती है। दूसरे शब्दों में यह व्यवहारकि कानून पर तथा प्राचीन परंपराओं की मान्यता पर आधारित है। इसका आधार यह विश्वास है कि किसी विशेष सत्ता का सम्मान किया जाना चाहिए क्योंकि यह युग-युगान्तरों से चली आ रही है।

पारंपरिक सत्ता के अंतर्गत शासक पीढ़ी मिली प्रस्थिति के कारण व्यक्तिगत सत्ता का उपभोग करते है। उनके आदेश रीति-रिवाजों के अनुरूप होते हैं और उन्हें शासित लोगों से अपना आदेश मनवाने का भी अधिकार होता है। प्रायः वे अपनी शक्ति का दुरूप्रयोग करते हैं। जो लोग उनके आदेशों का पालन करते हैं, वे उनकी प्रजा कहलाते है। यह प्रजा व्यक्तिगत निष्ठाा के कारण अथवा प्राचीन काल से मान्यता प्राप्त पद के प्रति पवित्र सम्मान के कारण अपने स्वामी के आदेशों का पालन करती है। आइए, अब हम इस संबंध में अपने समाज का ही एक उदाहरण लें। आप भारत में प्रचलित जाति प्रथा से भली भांति परिचित हैं। "निम्न" जातियां सदियों तंक "उच्च" जातियों के अत्याचार क्यों सहती रहीं? इसका एक स्पष्टीकरण यह हो सकता है कि "उच्च" जातियों की सत्ता को परम्पराओं तथा प्राचीन मान्यताओं का समर्थन प्राप्त था। कुछ लोगों का कहना है कि "निम्न" जातियों ने अपने दमन को सामाजिक स्वीकृति दे दी थी। इस प्रकार यह देखा जाता है कि पारंपरिक सत्ता प्राचीन परंपराओं को पवित्र मानने के विश्वास पर आधारित है। इससे सत्ता का इस्तेमान करने वालों को वैधता प्राप्त हो जाती है।

पारंपरिक सत्ता का संचालन लिखित नियमों और विधानों के अंतर्गत नहीं होता। यह पीढ़ी-दर- पीढ़ी विरासत में मिलती है। पारंपरिक सत्ता का कार्यान्वयन सगे-संबंधियों तथा समर्थकों के बल पर किया जाता है।

आधुनिक युग में पारंपरिक सत्ता में क्षीणता आई है। पारंपरिक सत्ता का सर्वाधिक सशक्त उदाहरण राजतंत्र (monarchy) अभी भी प्रचलित है, किन्तु उसका स्वरूप अब काफ़ी दुर्बल हो चुका है। इंग्लैंड की महारानी पारंपरिक सत्ता का प्रतिनिधित्व करती है, किन्तु जैसा कि आपको मालूम होगा वह अपनी सत्ता का वास्तविक प्रयोग नहीं करती। इंग्लैंड के कानून महारानी के नाम पर लागू किए जाते हैं किन्तु इन कानूनों का निर्माण जनता के प्रतिनिधि अर्थात संसद सदस्य करते हैं। महारानी के अधीन संसद है, जो देश का शासन चलाती है, किन्तु वह मंत्रियों की नियुक्ति नहीं करती। वह नाम मात्र की राज्यध्यक्ष है।

संक्षेप में, पारंपरिक सत्ता को वैधता प्राचीन परंपराओं से प्राप्त होती है, जो कुछ लोगों को आदेश देने की क्षमता प्रदान करती है, तथा अन्य लोगों को उनका पालन करने को बाध्य करती है। यह सत्ता विरासत में मिलती है और इसके लिए लिखित विधानों की आवश्यकता नहीं होती। शासक अपनी सत्ता का इस्तेमाल अपने समर्थक संबंधियों एवं मित्रों की सहायता से करते हैं। वेबर ने इस प्रकार की सत्ता को तर्कहीन माना है। इसलिए आधुनिक विकसित समाज में यह सत्ता बहुत कम पाई जाती है।

ii) करिश्माई अथवा चमत्कारिक सत्ता

करिश्माई अथवा चमत्कार का अर्थ हैं कुछ व्यक्तियों के असाधारण गुण (देखें कोष्ठक 11.1 करिश्मा)। ऐसे गुण से इन व्यक्तियों में सामान्य लोगों की निष्ठा तथा भावनाओं पर अधिकार कर लेने की क्षमता आ जाती है। करिश्माई सत्ता किसी व्यक्ति के प्रति असाधारण आस्था और उस व्यक्ति द्वारा बताई गई जीवन-शैली पर आधारित होती है। ऐसी सत्ता की वैधता व्यक्ति की अलौकिक अथवा मायावी शक्ति में निहित होती है। ऐसे नेता चमत्कारों, सैनिक या अन्य प्रकार की विजयों अथवा अपने अनुयायियों की आकस्मिक समृद्धि के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते है। जब तक ये करिश्माई नेता अपने अनुयाइयों अथवा समर्थकों की नज़र में अपनी चमत्कारिक शक्तियों को सिद्ध करते रहते हैं, तब तक उनकी सत्ता बराबर बनी रहती है। आपने महसूस किया होगा कि करश्माई सत्ता से जो सामाजिक क्रिया जुड़ी है, वह भावात्मक क्रिया है। करिश्माई नेताओं के प्रवचनों तथा उपदेशों के प्रभाव से समर्थक अत्यंत भावुक हो जाते है। यहां तक कि वे अपने नेता की पूजा तक करते है।

बॉक्स 11.1: करिश्माई

करिश्माई (चमत्कार) शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है ईश्वरीय वरदान।यह ईश्वर की कृपा से मिली योग्यता होती है। वेबर के अनुसार यह दूसरों पर लागू एक प्रकार की शक्ति है, जिसे लोग सत्ता के रूप में भी मानते हैं। जिस व्यक्ति के पास करिश्मे का गुण है उसकी सत्ता दैविक ध्येय, अंतदृष्टि, नैतिक गुण आदि से संबंधित मिथ्या के रूप में देखी जा सकती है।

करिश्माई सत्ता परंपरागत विश्वासों अथवा लिखित नियमों पर आधारित नहीं होती। यह अपनी विशेष क्षमता के बल पर शासन करने वाले नेता के विशेष गुणों का ही परिणाम बनती है। करिश्माई सत्ता संगठित नहीं होती, अतः इसमें कर्मचारियों अथवा प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता नहीं होती। नेता और उसके सहयोगियों का अपना कोई निश्चित व्यवसाय नहीं होता और वे प्रायः पारिवारिक दायित्वों से विमुख रहते हैं। ये गुण कभी-कभी चमत्कारिक व्यक्तियों को क्रांतिकारी भी बना देते है, क्योंकि उन्होंने सभी परंपरागत सामाजिक प्रतिमानों, तथा दायित्वों को अस्वीकार किया होता है।

व्यक्तिगत गुणों पर आधारित होने के कारण संबंद्ध नेता की मृत्यु अथवा उसके लापता होने की स्थिति में उत्तराधिकार की समस्या पैदा होती है। जिस व्यक्ति ने नेता का स्थान लिया है, संभव है उसमें वैसी चमत्कारिक शक्ति न हो। ऐसी स्थिति में नेता का मूल आदेश लोगों तक पहुंचाने के लिए जब किसी प्रकार का संगठन विकसित होता है तब मूल करिश्माई सत्ता या तो पारंपरिक सत्ता या तर्क-विधिक सत्ता का रूप ग्रहण कर लेता है। वेबर के अनुसार यह करिश्मा अथवा चमत्कार का सामान्यीकरण है।

बॉक्स 11.2: सामान्यीकरण (routinisation)

वेबर ने इस शब्द का प्रयोग "चमत्कारिक नेतृत्व के संस्थागत नेतृत्व में परिवर्तित हो जाने के लिए किया, जिसमें व्यक्ति की बजाय पद सत्ता का केंद्र बन जाता है।"

स्क्रूटन (1982: 415)

यदि चमत्कारिक नेता का पुत्र, पुत्री अथवा कोई निकट संबंधी उसका उत्तराधिकारी बनता है तब पारंपरिक सत्ता का अस्तित्व बना रहता है। किन्तु यदि चमत्कारिक गुणों

का स्पष्ट उल्लेख होता है या वे लिखित रूप में मौजूद होते हैं तो वह तर्क-विधिक सत्ता के रूप मं बदल जाती है जिसके अंतर्गत इन गुणों से संपन्न कोई भी व्यक्ति नेता बन सकता है। इस प्रकार करिश्माई सत्ता को अस्थिर एवं अस्थायी माना जा सकता है। हमारे समाज में करिश्माई सत्ता को अस्थिर एवं अस्थायी माना जा सकता है। दिगम्बर तथा कुछ राजनेता ऐसी सत्ता के उदाहरण है। उदाहरणतः कबीर, नानक, ईसा मसीह, मोहम्मद पैगम्बर, लेनिन और महात्मा गांधी आदि। लोगों ने उसका सम्मान पारंपरिक सत्ता या तर्क-विधिक सत्ता के कारण नहीं बल्कि उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं तथा उनके द्वारा दिए गए संदेश और उपदेश के कारण किया।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित तीन प्रश्नों के सही उत्तर बताइए।

i) वेबर के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा सत्ता का प्रकार नहीं है?

   क) पारंपरिक सत्ता

   ख) तर्क-विधिक सत्ता

   ग) करिश्माई अथवा चमत्कारिक सत्ता

   घ) व्यक्तिगत सत्ता

ii) जब किसी नेता की मूल करिश्माई अथवा चमत्कारिक क्षमता पारंपरिक अथवा तर्कविधिक सत्ता में बदल जाती है तो वेबर के अनुसार क्या स्थिति होती है?

   क) करिश्मा अथवा चमत्कार का समान्यीकरण

   ख) सत्ता का सामान्यीकरण

   ग) नेतृत्व का सामान्यीकरण

   घ) शक्ति का सामान्यीकरण

iii) पारंपरिक सत्ता को किसके द्वारा वैधता मिलती है?

   क) देश का कानून

   ख) प्राचीन परंपराएं

   ग) नेता की श्रेष्ठ उपलब्धियां

   घ) उपर्युक्त सभी

iii) तर्क-विधिक सत्ता

यह शब्द सत्ता की उस प्रणाली को बोध कराता है, जो तार्किक है तथा कानूनी भी। यह सत्ता नियमित कर्मचारी वर्ग में निहित है, जिन्हें कुछ लिखित कानूनों एवं नियमों के अंतर्गत काम करना होता है। इस वर्ग के लोगों की नियुक्ति उनकी योग्यताओं के आधार पर की जाती है। ये योग्यताएं निर्धारित तथा संहिताबद्ध होती है। जिन के पास यह सत्ता होती है, उनका यह व्यवसाय होती है तथा वे इसके लिए वेतन पाते है। इस प्रकार यह एक तार्किक प्रणाली है।

यह वैधानिक इसलिए है क्योंकि यह देश के कानून के अनुरूप है जिसे सभी की मान्यता प्राप्त होती है और उसका पालन करना सभी का कर्त्तव्य समझा जाता है। आदेशों और नियमों तथा उन नियमों को कार्यान्वित करने वालों की प्रस्थिति तथा पद दोनों की वैधता को स्वीकार किया जाता है एवं उसका सम्मान होता है।

तर्क-विधिक सत्ता आधुनिक समाज का विशिष्ट पहलू है। यह तार्किकता की प्रक्रिया की अभिव्यक्ति हैं। याद रखें कि वेबर ने तार्किकता को पश्चिमी सभ्यता की मुख्य विशेषता माना है। वेबर के अनुसार यह मानव चिंतन तथा विचार-विमर्श की विशेष देन है। अब तक आपने तर्क-विधिक सत्ता तथा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए तार्किक कार्य के परस्पर संबंध को भली प्रकार समझ लिया होगा।

आइए, अब हम तर्क-विधिक सत्ता के उदाहरणों को देखें। सभी लोग कर समाहर्ता (tax-collector) की आज्ञा मानते है क्योंकि उसके द्वारा जारी किए जाने वाले आदेश की वैधता में सब को विश्वास है। यह भी मान्य है कि उसे लोगों को कर संबंधी नोटिस भेजने का कानूनी अधिकार है। जब ट्रैफिक पुलिस वाला लोगों को गाड़ी रोकने का इशारा करता है तो उनका वाहन इसीलिए रोका जाता है क्योंकि उनमें कानून द्वारा उसे दिए गए अधिकार का सम्मान है। आधुनिक समाज में व्यक्ति से नही, बल्कि कानूनों एवं अध्यादेशों से शासन चलता है। लोग पुलिस के व्यक्ति का कहना उसके पद और वर्दी के कारण मानते है, जो कानून का प्रतिनिधित्व करती है। वे उसका कहना इसलिए नहीं मानते कि वह श्रीमान "क" अथवा "ख" नाम का व्यक्ति है। तर्क-विधिक सत्ता केवल राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र में नहीं बल्कि बैंक, उद्योग आदि आर्थिक क्षेत्रों तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठनों में भी चलती है।

सामाजिक कार्य तथा सत्ता के प्रकारों के बारे में उपर्युक्त चर्चा के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि पारंपरिक सत्ता का संबंध परम्परागत क्रिया से, तर्क-विधिक सत्ता का संबंध लक्ष्य के संदर्भ में तार्किक कार्य से और करिश्माई सत्ता का संबंध भावात्मक कार्य से है।

परन्तु एक बात साफ़ नज़र है कि वेबर ने सामाजिक कार्य के चार प्रकार और सत्ता के कवेल तीन प्रकार बताए है। सामाजिक कार्य और सत्ता के वर्गीकरण में यह अंतर चर्चा का विषय हो सकता है जिसे स्नातकोत्तर पाठ्य सामग्री में शामिल किया जाएगा।

तर्क-विधिक सत्ता संचालन के ढंग को अच्छी तरह से समझने के लिए "नौकरशाही" का विवेचन करना आवश्यक है। नौकरशाही के माध्यम से ही तर्क-विधिक सत्ता को कार्यान्वित किया जा सकता है। अगले भाग में इसी विषय की विवेचना की गई है। अगले भाग को पढ़ने से पहले सोचिये और करिये 2 को अवश्य पूरा कर लें।

सोचिए और करिए 2

अपने समाज में तर्क-विधिक सत्ता या पारंपरिक सत्ता का उदाहरण दीजिए, जिसमें उस सत्ता की वैधता के आधार का विशेष रूप से उल्लेख कीजिए तथा एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों से अपनी टिप्पणी का मिलान कीजिए।

11.4 नौकरशाही

जैसा कि ऊपर बताया गया है, नौकरशाही वह तंत्र है जिससे तर्क-विधिक सत्ता लागू होती है। मैक्स वेबर ने नौकरशाही का विस्तृत विवेचन किया है और एक आदर्श प्ररूप की परिकल्पना प्रस्तुत की है, जिसमें नौकरशाही की सभी विशेषताएं समाहित है। आइए, अब हम इसी आदर्श प्ररूप की व्याख्या करें, जिससे नौकरशाही के प्रमुख पहलुओं की जानकारी प्राप्त होगी।

11.4.1 नौकरषाही के मुख्य लक्षण

i) नौकरशाही का संचालन अधिकार क्षेत्रों के सिद्धांत पर होता है, जो कुछ कानूनों अथवा प्रशासनिक नियमों पर आधारित होते है। इनको नीचे दिया जा रहा है।

   क) अधिकारी वर्ग में नौकरशाही की गतिविधियों का बंटवारा सरकारी कर्त्तव्य के रूप में किया जाता है।

   ख) एक स्थायी अथवा नियमित प्रणाली होती है, जिसके अंतर्गत अधिकारी में सत्ता निहित होती है। यह सत्ता देश के कानूनों के अधीन होती है।

   ग) कठोर एवं विधिवत कार्यप्रणाली होती है, ताकि अधिकारी वर्ग अपना कर्त्तव्य उचित रूप में निभा सके।

   इन तीन लक्षणों के मिलाकर "नौकरशाही सत्ता" की रचना होती है, जो आधुनिक विकसित समाजों में विद्यमान है।

ii) नौकरशाही का दूसरा लक्षण है सत्ता सम्पन्न अधिकारियों का पदक्रम। इससे तात्पर्य यह है कि उच्च तथा निम्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक निश्चित ढांचा होता है। निचले पदों पर काम करने वाले कर्मचारियों को उच्च अधिकारियों के निर्देशन में काम करना होता है और उनके प्रति जवाबदेही रखनी होती है। इस तंत्र का एक लाभ यह है कि निचले अधिकारियों के प्रति अपने असंतोष की अभिव्यक्ति उच्च अधिकारियों से अपील के रूप में शासित लोगों द्वारा की जाती है। उदाहरण के लिए यदि आप किसी कार्यालय में क्लर्क अथवा अधिकारी के आचरण से असंतुष्ट हो तो यह संभव है कि आप अपनी शिकायत उच्च अधिकारी तक पहुंचाए।

iii) नौकरशाही कार्यालय का प्रबंध लिखित दस्तावेजों या फाइलों के द्वारा चलता है। ये दस्तावेज उन कर्मचारियों द्वारा सुरक्षित तथा सही ढंग से रखे जाते हैं, जिनकी नियुक्ति इसी काम के लिए होती है।

iv) नौकरशाही कार्यालयों का काम विशिष्ट प्रकार का होता है और इसके लिए कर्मचारियों को समुचित प्रशिक्षण दिया जाता है।

v) पूर्ण विकसित नौकरशाही कार्यालय के संचालन के लिए कर्मचारियों को पूरी दक्षता से काम करना होता है। ऐसी स्थिति में कर्मचारियों को निर्धारित कार्य-समय से अधिक समय तक भी काम करना पड़ सकता है।

नौकरशाही तंत्र के मुख्य लक्षणों का अध्ययन करने के बाद आइए, अब हम इसमें पाए जाने वाले कर्मचारी वर्ग के संबंध में कुछ चर्चा करें।

11.4.2 नौकरशाही में अधिकारी वर्ग की विषेशताएं

वेबर ने नौकरशाही में अधिकारी की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है।

i) अधिकारी के लिए कार्यालय का काम उसका "व्यवसाय" है।

ii) उसके काम के बारे में अधिकारी को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

iii) कार्यालय में उसकी प्रस्थिति और पद उसकी योग्यताओं के अनुसार निर्धारित होता है।

iv) उससे अपेक्षा की जाती है कि वह ईमानदारी से काम करे।

आइए, अब हम इस पर विचार करें कि अधिकारी की सरकारी स्थिति से उसका निजी जीवन किस प्रकार प्रभावित होता है।

i) नौकरशाही अथवा सरकारी अधिकारियों का समाज में ऊंचा दर्जा होता है।

ii) प्रायः एक स्थान से दूसरे स्थान या एक विभाग से दूसरे विभाग में उसका स्थानांतरण होता रहता है। इससे उसके व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत जीवन में एक तरह की अस्थिरता रहती है।

iii) अधिकारियों को वेतन उत्पादकता के अनुसार नहीं बल्कि उनके पद के अनुसार मिलता है। जितना ऊंचा उनका पद होगा, उतना अधिक उनका वेतन होगा। उन्हें पेशन, भविष्यनिधि, चिकित्सा तथा अन्य प्रकार की सुविधाएं भी मिलती है। उनकी नौकरी अति सुरक्षित मानी जाती है।

iv) अधिकारियों को जीवन में आगे बढ़ने के अच्छे अवसर मिलते हैं। अनुशासित ढंग से काम करने वाले अधिकारी के लिए निचले स्तर से तरक्की करके उच्च स्तर पर पहुंचना संभव है।

बोध प्रश्न 3

i) निम्नलिखित प्रश्न का सही उत्तर बताइए

नौकरशाही निम्न में से किसका उदाहरण हैं?

क) पारंपरिक सत्ता

ख) तर्क-विधिक सत्ता

ग) करिश्माई सत्ता

घ) इनमें से कोई नहीं

ii) नौकरशाही सत्ता के महत्वपूर्ण लक्षणों का तीन पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

iii) नौकरशाही में अधिकारियों की महत्वपूर्ण विशेषताओं का उल्लेख चार पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.5 सारांश

इस इकाई के प्रारंभ में हमने "शक्ति" और "सत्ता" के बारे में वेबर की अवधारणाओं पर चर्चा की। इसके बाद वेबर द्वारा बताए गए सामाजिक कार्य के प्रकारों तथा सत्ता के प्रकारों का विवेचन किया गया। हमने पारंपरिक, करिश्माई अथवा चमत्कारिक एवं तर्क-विधिक सत्ता का अध्ययन किया। अंत में हमने उस तंत्र अर्थात् नौकरशाही के पहलुओं पर ध्यान दिया, जिसके माध्यम से तर्क-विधिक सत्ता का संचालन होता है। हमने नौकरशाही में अधिकारी वर्ग की विशेषताओं का भी अध्ययन किया।

11.6 संदर्भ

इंन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पाठ्यसामग्री : सामाजशास्त्रीय सिद्धांत (ESO 13), इग्नू : नई दिल्ली

बेन्डिक्स, रैनआरी, 1960. मैक्स वेबरः एन इंटलैक्चुअल पोर्ट्रेट हाइनमनः लंदन

फ्राएंड, जूलियन, 1968. द सोशियोलॉजी ऑफ़ मैक्स वेबर रैंडम हाउसः न्ययार्क

11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) दूसरों पर अपनी इच्छा थोपने की किसी व्यक्ति की क्षमता को शक्ति कहते है।

ii) शक्ति औपचारिक मुक्त बाजार में पनपने वाले हितों के मेल से प्राप्त की जा सकती है। यह सत्ता की सुव्यवस्थित प्रणाली से भी प्राप्त की जा सकती है जो आदेश देने के अधिकार तथा उसका पालन करने के कर्त्तव्य का निर्धारण करती है।

iii) क) किसी शासकस्वामी अथवा शासकोंस्वामियों के समूह की विद्यमानता।

ख) शासित व्यक्ति समूह की विद्यमानता

ग) शासितों द्वारा आज्ञा माने जाने और निष्ठा प्रदर्शन के रूप में शासकों के प्रभाव का प्रमाण

बोध प्रश्न 2

i) घ)

ii) क)

iii) ख)

बोध प्रश्न 3

i) ख)

ii) नौकरशाही सत्ता के तीन प्रमुख लक्षण है

क) इसका संचालन अधिकार क्षेत्र के उस सिद्धांत पर होता है, जो कुछ प्रशासनिक नियमों पर आधारित रहता है।

ख) एक स्थायी नियमित प्रणाली होती है, जिसके अंतर्गत अधिकारियों में सत्ता निहित होती है।

ग) कठोर तथा नियमित कार्यप्रणाली, जिनसे यह सुनिश्चित किया जाता है कि अधिकारी अपना कर्त्तव्य उचित रूप से निभाते रहें।

iii) नौकरशाही के अधिकारियों की विशेषताएं हैं

क) कार्यालय का नाम अधिकारियों का "व्यवसाय" होता है।

ख) उन्हें अपने काम के बारे में विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

ग) कार्यालय में उनकी स्थिति और पद उनकी योग्यताओं के अनुसार निर्धारित होता है।

घ) उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे ईमानदारी से काम करें।